[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 6950 **E** **Your Roll No................**

Unique Paper Code : 213681

Name of the Course : **Sanskrit [Discipline Centered Course for B.A. (Hons.)]**

Name of the Paper : Sanskrit Literature : Text and Grammar

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Unless otherwise required in a question, answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English, but the same medium should be used throughout the paper.
3. **All** questions are compulsory.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. अन्यथा आवश्यक न होने पर, प्रश्नपत्र के उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी प्रश्नों का माध्यम एक ही होना चाहिए।
3. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का अनुवाद कीजिए : (4×2=8)

Translate any **two** of the following :

(i) देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥

(ii) न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

(iii) दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।।

(iv) योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।

सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×6=12)

Explain any **two** of the following with reference to the context :

(i) अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।

ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ।।

(ii) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

(iii) य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।

उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ।।

(iv) यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।।

3. गीता के द्वितीय अध्याय के अनुसार स्थितप्रज्ञ के लक्षण बताइए । (10)

Describe the features of 'स्थितप्रज्ञ' according to second chapter of the Gita.

अथवा / OR

गीता के द्वितीय अध्याय का महत्त्व बताइए ।

Describe the importance of second chapter of the Gita.

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का अनुवाद कीजिए : (2×4=8)

Translate any **two** of the following :

(i) विस्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता देशागतप्रत्यया

वृक्षाः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः सर्वे दयारक्षिताः ।

भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनान्यक्षेत्रवत्यो दिशो

निःसंदिग्धमिदं तपोवनमयं धूमो हि बह्वाश्रयः ।।

(ii) परिहरतु भवान् नृपापवादं न परुषमाश्रमवासिषु प्रयोज्यम्

नगरपरिभवान् विमोक्तुमेते वनमभिगम्य मनस्विनो वसन्ति ।।

(iii) दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः

स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम् ।

यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह बाष्पं

प्राप्तानृण्या याति बुद्धिः प्रसादम् ।।

(iv) अनाहारे तुल्यः प्रततरुदितक्षामवदनः

शरीरे संस्कारं नृपतिसमदुःखं परिवहन् ।

दिवा वा रात्रौ वा परिचरति यत्नैर्नरपतिं

नृपः प्राणान् सद्यस्त्यजति यदि तस्याप्युपरमः ।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×6=12)

Explain any two of the following with reference to the context :

(i) गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः ।

कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः ।।

(ii) इयं बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत् ।

कामं धीरस्वभावेयं स्त्रीस्वभावस्तु कातरः ।।

(iii) सविश्रमो ह्ययं भारः प्रसक्तस्तस्य तु श्रमः ।

तस्मिन् सर्वमधीनं हि यत्राधीनो नराधिपः ।।

(iv) शय्यायामवसुप्तं मां बोधयित्वा सखे! गता ।

दग्धेति ब्रुवता पूर्वं वञ्चितोऽस्मि रुमण्वता ।।

6. "स्वप्नवासवदत्तम्" के आधार पर भास की शैली का वर्णन कीजिए । (10)

Describe the poetics style of Bhasa on the basis of "स्वप्नवासवदत्तम्".

अथवा / OR

'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर पद्मावती का चरित्र चित्रण कीजिए ।

Sketch the character of पद्मावती as depicted in "स्वप्नवासवदत्तम्".

7. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन का सन्धि-विच्छेद कीजिए : (3×2½=7½)

Disjoin sandhi in any **three** of the following :

अद्यैव, भिन्नास्ते, खल्वहम्, चावेक्ष्य, शीतोष्णम्, नासम्

8. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन रेखाङ्कित शब्दों में विभक्ति निर्देश कीजिए : (3×2½=7½)

Name the case ending in any **three** of the following :

(i) शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ।

(ii) कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।

(iii) तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठता ।

(iv) तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि ।

(v) यैः प्रथम प्रदिष्टा ।

(vi) आर्ये कस्मै ?